

जापान का आधुनिकीकरण- I

जापान में विदेशी उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद के विरुद्ध हुई प्रतिक्रिया के रूप में शोगून व्यवस्था की समाप्ति तथा नवीन सम्राट के रूप में मेईजी पुनः स्थापना तो हो चुकी थी, परन्तु विदेशी हस्तक्षेप से प्रतिरक्षा हेतु जापान को अब नव निर्माण की आवश्यकता थी। पश्चिमी ज्ञान एवं विज्ञान की आधुनिकतम जानकारी प्राप्त कर जापान का पुनर्गठन आधुनिक राष्ट्र के रूप में किया जाना था। जापान को प्राचीन परम्पराओं एवं प्राचीन गौरव के बन्धन से बाहर निकल साम्राज्यवादी विश्व का सामना करने के लिए तैयार होना था ताकि शोगून व्यवस्था की समाप्ति, और मेईजी पुनर्स्थापना के औचित्य को सिद्ध किया जा सके। जापान को आधुनिकीकरण के प्रत्येक क्षेत्र में ठोस कदम उठाने थे। मेईजी पुनर्स्थापना के बाद जापान ने वही किया जिसका वह हकदार था। उसने पीछे मुड़कर देखना बन्द कर दिया। शोगून की समाप्ति और मेईजी की पुनर्स्थापना को जापान ने अतीत की धरोहर नहीं बनने दिया वरन् उससे प्रेरणा ग्रहण कर जापान को विकास और आधुनिकीकरण के ऐसे रास्ते पर ला खड़ा किया जहाँ जापान को आधुनिक जापान की संज्ञा मिली। जापान के लोग पाश्चात्य देशों के सम्मुख चीन का पतन देख चुके थे, वे इस बात को समझ चुके थे कि यदि विदेशी साम्राज्यवाद का सामना करना है तो प्राचीन परम्पराओं से बाहर निकल कर पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान, तकनीक और सैन्य-संगठन को अपनाना ही होगा। इसीलिए जापान ने मेईजी पुनर्स्थापना के फौरन बाद आधुनिकीकरण की राह पकड़ ली। जापान में आधुनिकीकरण के लिए प्रबल एवं ठोस आन्दोलन चला जिसने देश के जीवन में अमूल परिवर्तन किए जो जापान के आधुनिकीकरण के लिए उत्तरदायी थे। 1868 ई. की मेईजी पुनर्स्थापना के बाद जापान के आधुनिकीकरण के लिए जो प्रयास किए गए उनका उल्लेख इस प्रकार है।

जापान से सामन्तवादी व्यवस्था का उन्मूलन-

जापान से शोगून व्यवस्था की समाप्ति और मेईजी पुनर्स्थापना के बाद सबसे बड़ा प्रश्न यह था कि देश में एक व्यवस्थित, केन्द्रीय, और शक्तिशाली सरकार एवं प्रशासन की स्थापना कैसे की जाए ताकि सम्पूर्ण जापान आन्तरिक भेदभावों को भूलकर एक केन्द्रीय शासन के अधीन खड़ा हो सके।

जापान से शोगून व्यवस्था का अन्त हुआ था किन्तु सामन्तवादी व्यवस्था अभी भी विद्यमान थी। सामन्ती परिवार सम्पूर्ण जापानी समाज में फैले थे और अपने-अपने क्षेत्र में शासन की समस्त व्यवस्था देखते थे। केन्द्रीय शासन की मजबूती के लिए सामन्तवादी ढाँचे का ढहना आवश्यक था। लगता नहीं था कि शोगून व्यवस्था की समाप्ति के साथ सामन्तवादी व्यवस्थाएँ भी समाप्त हो जाएगी। परन्तु, मेईजी पुनर्स्थापना का प्रभाव सम्पूर्ण समाज और राष्ट्र पर इस तरह छाया हुआ था कि सामन्तों ने राष्ट्रीयता की भावना को स्वीकार कर अपने अधिकारों को छोड़ने का निश्चय कर लिया।

राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर सातसूमा, चोशू, तोसा और हीजन सामन्तों ने 1868 ईमें एक आन्दोलन द्वारा अपनी रियासतें सम्राट को अर्पित कर दीं और अपनी समस्त सुविधाएं छोड़ना स्वीकार किया। कुछ अन्य सामन्तों ने भी उनका अनुकरण किया। शेष को सम्राट के आदेश द्वारा समाप्त कर दिया गया। रियासतें सम्राट के अधीन हो गई थी किन्तु जागीरों पर सामन्तों का अधिकार बना हुआ था। रियासतों को जिले(हान) का नाम देकर वहाँ के सामन्त (डैम्यो) को ही वहाँ का प्रशासक नियुक्त कर दिया गया। अब वह केन्द्र सरकार के अधीन जिले का प्रशासक था। जिले की आय का दसवां भाग डैम्यों का वेतन निर्धारित किया गया। वर्ष में तीन माह उन्हें राजधानी टोक्यों में रहना होगा, ऐसा निश्चित किया गया।

अगस्त 1871 ई. में जापान सरकार द्वारा सामन्त व्यवस्था की पूर्णरूप से समाप्ति की घोषणा कर दी गई। समस्त देश को तीन शहरी प्रदेशों (फू) ओसाका, क्योटो और टोकियों तथा 72 अन्य प्रदेशों (केन) में विभक्त किया गया। शासन की इकाईयाँ प्रदेश (केन), जिला (गून), शहर (फू), कस्बा (माची) और गाँव (मूरा) में विभक्त थीं। समस्त क्षेत्रों में केन्द्रीय अधिकारी नियुक्त किए गए थे।

डैम्यों और सामूराइयों के वेतन एवं भत्तों में धीरे-धीरे कटौती की जाती रही। 1883 ईमें तब डैम्यों और यामूराइयों के वेतन, जामदाद आदि समाप्त हो गए और वे आमजन में तब्दील हो गए।

इस प्रकार, सदियों से चली आ रही सामन्तवादी सामाजिक व्यवस्था समाप्त हो गई। और सम्पूर्ण देश एकता के सूत्र में बँध गया। यह एक ऐसी सामाजिक, राजनीतिक क्रान्ति थी जो रक्तहीन थी मगर गौरव से परिपूर्ण थीं।

जापान में सैनिक सुधार -

अभी तक जापान की सैनिक, व्यवस्था मध्यकालीन सामन्तीय व्यवस्था के आधार पर गठित थी। अब जबकि सामन्तवादी ढाँचा जापान से समाप्त किया जा चुका था, सेना के गठन में सुधार की आवश्यकता को गम्भीरता से अनुभव किया गया।

अभी तक सेना के गठन में सामूराई वर्ग की महत्वपूर्ण भूमिका होती थी। सामूराई वर्ग के लोग ही सामन्तों के अधीन सेना में नियुक्त किए जाते थे। जन साधारण वर्ग सैनिक सेवा के लिए अयोग्य माना गया था। मेईजी पुर्नस्थापना ने सेना में सम्मिलित होने के सामूराई वर्ग के एकाधिकार को समाप्त कर दिया। जापान के सभी वर्गों के लिए सेना में भर्ती के लिए द्वार खोल दिए गए। जापान का कोई भी व्यक्ति सैनिक कार्य के लिए सेना में भर्ती हो सकता था। जापानी सेना का स्वरूप राष्ट्रीय हो गया। पुराना सामन्ती स्वरूप समाप्त हो गया।

फ्रेंच सैन्य तकनीक और फिर जर्मन सैन्य तकनीक द्वारा सेना में सुधार किए गए। सैनिक अधिकारियों के प्रशिक्षण के लिए फ्रांसीसी एवं जर्मन सैन्य अधिकारियों को नियुक्त किया गया। राष्ट्रीय सेना को तीन भागों में गठित किया गया। नियमित सेना, रिजर्व सेना और राष्ट्रीय सेना। 1871 ई. में 'इम्पीरियल गार्ड' नामक सैनिक दल गठित किया गया। 1873 ई. में राजाज्ञा द्वारा सैनिक सेवा अनिवार्य कर दी गई। 21 वर्ष के प्रत्येक स्वस्थ जापानी युवक को सैनिक सेवा के रूप में प्रथम तीन वर्ष नियमित सेना में, आगामी चार वर्ष रिजर्व सेना में और 40 वर्ष की आयु तक राष्ट्रीय सेना में रहना, अनिवार्य कर दिया गया।

जल सेना को भी आधुनिक ढंग से प्रशिक्षित किया गया। इसके लिए डच सैनिक अधिकारियों को नियुक्त किया गया। कुछ अधिकारियों को गहन प्रशिक्षण के लिए इंग्लैण्ड और अमेरिका भी भेजा गया। 1869 ई. में जल सेना के प्रशिक्षण के लिए टोकियो में एक प्रशिक्षण स्कूल खोला गया। 1872 ई. में सेना विभाग स्थापित किया गया। 1875 ई. में जापान ने प्रथम युद्धपोत तैयार कर लिया। जापान के राष्ट्रीय चरित्र पर आधुनिक सैन्यकरण का गहन प्रभाव हुआ और वहाँ सैनिकवाद की उत्पत्ति हुई।

सामन्तीय चिन्हों की समाप्ति-

सामन्तवादी व्यवस्था की समाप्ति के बाद भी उनके ऐसी चीजे समाज में उपस्थित थीं जो सामान्य जन को सामन्तों से अलग करती थीं। जापानी सरकार ने इस प्रकार की सभी बातों को धीरे-धीरे समाप्त कर दिया। 1869 ई. में सरकारी और व्यावसायिक नौकरियों पर से वर्ग विषयक पाबन्दियाँ हटा ली गईं। 1880 ई. में सामान्य जनता को भी पारिवारिक नाम धारण करने के अधिकार मिल गए। 1871 ई. में जापान के निम्न वर्ग को भी पूर्ण स्वतन्त्रता दे दी गई। 1876 ई. में सामन्त एवं सामूराई वर्ग के लोगों को तलवार रखने की मिली सुविधा समाप्त कर दी गई। इससे सामन्ती प्रतिष्ठा और पार्थक्य का दिखावटी प्रदर्शन और चिन्ह समाप्त हो गए। जापान का हर व्यक्ति अब समान था।

आधुनिक नौकरशाही की स्थापना-

सामन्तों द्वारा संचालित स्थानीय प्रशासन के स्थान पर सुगठित नौकरशाही की स्थापना की गई। टोकियो स्थित अधिकारियों द्वारा योग्यता के आधार पर नियुक्तियाँ दी जाती थीं। इनके हाथ में सम्पूर्ण देश का स्थानीय एवं केन्द्रीय प्रशासन रहता था। सम्राट के अपने प्रतिनिधियों द्वारा इस नौकरशाही व्यवस्था के माध्यम से प्रजा का छोटे से छोटा व्यक्ति भी संरक्षित और शासित होता था।

आरम्भ में नौकरशाही व्यवस्था में सामूराई वर्ग के लोगों को अधिक नियुक्त किया गया क्योंकि ये ही प्रशासन संचालन से भलीभाँति परिचित थे। लेकिन बाद में प्रशासनिक सेवा के पदों पर प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्ण व्यक्तियों को नियुक्त किया जाने लगा। प्रतियोगी परीक्षाओं में समाज का प्रत्येक व्यक्ति बिना भेदभाव के सम्मिलित हो सकता था। कृषि के क्षेत्रों में सुधार- कृषि के क्षेत्रों में सुधार की दिशा में सरकार द्वारा पहल की गई। सामन्तवादी व्यवस्था में कृषकों की दशा अत्यधिक शोचनीय थी। मेईजी सरकार द्वारा कृषकों को ही उस भूमि का स्वामी मान लिया गया जिस पर वे खेती कार्य करते चले आ रहे थे। बेगारी-प्रथा का उन्मूलन कर दिया गया। कृषि कर की अदायगी नगदी द्वारा की जाने लगी। कृषि में आधुनिक तकनीक को अपनाया जाने लगा।

शासन की आर्थिक कठिनाईयों के कारण कृषकों को बहुत अधिक सुविधाएँ नहीं मिल सकीं। जमीन की कीमत का 3 प्रतिशत लगान बहुत अधिक था, किसान इसको चुकाने में असमर्थ थे जिसके कारण सरकार को विद्रोहों का सामना भी करना पड़ा। कालान्तर में 3 प्रतिशत के स्थान पर लगान की दर प्रतिशत कर दी गई। पैदावार बढ़ाने के लिए सरकारी सहायता दी गई। खेती वैज्ञानिक तरीके से की जाने लगी। मगर किसानों की स्थिति में परिवर्तन नहीं आया। लाचार होकर उन्हें अपनी भूमियाँ बेचनी पड़ीं जिनको पुराने सामन्तों ने खरीद लिया, किसान मजदूर होकर रह गए। मेईजी काल में किसान की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया।

औद्योगिक एवं वाणिज्यिक विकास-

मेईजी काल के सुधारों में सबसे अधिक परिवर्तन औद्योगिक, बैंकिंग, वाणिज्य, परिवहन, आदि क्षेत्रों में देखने को मिलता है। जापान की सरकार ने अपना समस्त ध्यान औद्योगिक विकास पर दिया।

जापानी सरकार ने पाश्चात्य जगत का सामना करने के लिए अपने उद्योगों पर अत्यधिक ध्यान देना आवश्यक समझा। नवीन कारखाने खोले गए। यूरोप तथा अमेरिका से तकनीक, इंजीनियर तथा मशीनें आयात की गईं। जापान शीघ्र ही औद्योगिक क्रान्ति की तरफ अग्रसर हो गया। कपड़ा, रेशम, लोहे का सामान, प्रचुर मात्रा में बनाया जाने लगा। लोहे एवं इस्पात के व्यवसाय को उन्नत किया गया। खदानों से खनिज निकाले गए। युद्धोपयोगी वस्तुओं के उत्पादन पर भी अधिक जोर दिया गया। 1890 ई. तक जापान के अधिकांश कल- कारखाने भाप की शक्ति से काम करने लगे।

सामूराई और पुराने कुलीन सामन्तों को उद्योग-व्यवसाय में धन लगाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। शीघ्र ही जापान वस्त्र उद्योग में प्रमुख देश बन गया। 1881 ई. में सरकार ने लोहे की खदानों में पूँजी निवेश तथा सोने चाँदी की खदानों में 90 प्रतिशत व्यापार अपने संरक्षण में ले लिया। सीमेन्ट, काँच और सफेद पक्की ईंट बनाने के कारखाने लगाए गए। दियासलाई और कागज बनाने के उद्योग निजी क्षेत्रों में खोले गए। मेईजी काल में पुरानी दस्तकारी का स्थान औद्योगिक क्रान्ति द्वारा विकसित नए तरीकों ने ले लिया।

सरकार ने टोकियो और ओसाका में तोप, बन्दूक, गोला और बारूद बनाने के कारखाने लगवाए। ओसाका कारखाने में लगभग 1100 मजदूर कार्य करते थे। 1869 ई. में हीजन में आधुनिक ढंग की कोयले की खदान चालू की गई। 1873 ई. में खान विभाग की स्थापना हुई जिसमें विदेशी रखे गए। 1880 ई. तक कोयले की 8 और 1881 ई. में सरकार ने एक और लोहे की खान खोली जिससे कि उद्योगों को पर्याप्त मात्रा में लोहा और कोयला प्राप्त हो सके। उद्योगों के साथ-साथ वाणिज्य, बैंक एवं परिवहन के क्षेत्र में भी आवश्यक सुधार किए गए। जापान में काफी प्रयासों के बाद वाणिज्य अपने विकास की पूर्ण पराकाष्ठा पर पहुँचा। 1881 ई. तक व्यापार का सन्तुलन जापान के प्रतिकूल था और उसकी पर्याप्त मुद्रा देश से बाहर निकल जाती थी। 1887 ई. के बाद सरकार के सक्रिय निरीक्षण तथा उद्योगों के आन्तरिक पुनर्गठन से व्यापक परिवर्तन आए। उद्योगों एवं वाणिज्य के साथ-साथ बैंकिंग क्षेत्र का भी उद्भव हुआ। 1873 ई. में अमेरिका के नमूने पर एक राष्ट्रीय बैंक की स्थापना की गई। 1881 ई. में बैंक आफ जापान की स्थापना हुई। व्यापार और विदेशी मुद्रा विनिमय के कार्य में सहायता के लिए एक उपसंस्थान की भी स्थापना की गई। जिसे योकोहामा स्पीशी बैंक कहा गया। 150 बैंक अस्तित्व में आ गये। सोने और चाँदी का संचय किया गया। डाकघरों में बचत बैंक योजना शीघ्र ही आरम्भ की गई। 1894 ई. के बाद कृषि सम्बन्धी एवं औद्योगिक बैंक अलग से खोले गए।

उद्योग और वाणिज्य के लिए आवश्यक तत्व परिवहन एवं यातायात की तरफ भी ध्यान दिया गया। समुद्र तट पर जहाजों की संख्या में वृद्धि की गई। आरम्भ में विदेश निर्मित जहाजों को उपयोग में लाया गया। धीरे-धीरे देश में ही जहाजों का निर्माण होने लगा, भाप से चलने वाले बड़े जहाजों को बनाया गया। 1890 ई. के आसपास जापान में 100-100 टन के जहाज बनने लगे। 1883 ई. तक नागासाकी के कारखानों में 10 और हयोगी के कारखानों में 23 जहाज तैयार हुए, ये सभी भाप से चलने वाले थे। 19वीं शताब्दी के अन्त तक जापान एक प्रमुख नौ- शक्ति बन गया।

जापान सरकार द्वारा रेलवे की तरफ भी ध्यान दिया गया। 1872ई. में रेल लाइनों का निर्माण कार्य शुरू किया गया और देखते ही देखते 1894 ई. तक सम्पूर्ण देश में रेल लाइनों का जाल फैल गया। आरम्भ में रेलवे का निर्माण सरकार द्वारा अथवा सरकार सहायता प्राप्त कम्पनियों द्वारा किया गया आगे चलकर निजी कम्पनियाँ भी इस क्षेत्र में आ गईं। राज्य में डाक-तार व्यवस्था पर भी ध्यान दिया गया। 1877 ई. में टेलीफोन का प्रारम्भ किया गया। जापान के इस तीव्र औद्योगिक विकास से उसका स्थान पाश्चात्य देशों के समकक्ष हो गया। अपने औद्योगिक विकास के बल पर वह शीघ्र ही साम्राज्यवाद की तरफ चल दिया, क्योंकि परिवर्तित स्थिति में वह उत्पादित माल के लिए बाजार की खोज में लग गया और अपने यहाँ लगे उद्योगों के लिए कच्चे माल के लिए भी मण्डी की खोज में लग गया, परिणामतः साम्राज्यवाद से पीछा छुड़ाने के चक्कर में जापान स्वयं एक साम्राज्यवादी देश बन गया।